सिन्धु घाटी का श्रेष्ठ अंतिम



मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं। इस विषय में जो कुछ भी अल्प ज्ञान प्राप्त है वह मूर्तियों तथा मुद्राओं पर बने हुये चित्रों द्वारा। ये लोग बहुदेव वादी व मूर्ति पूजक थे। आर० सी० मजूमदार का कथन है कि यह वास्तव में एक विशेष आश्चर्य की बात है कि इतनी प्राचीनतम सभ्यता में अर्वाचीन हिन्दू धर्म के मुख्य अङ्गों का प्रचलन था।

"We must therefore hold that there is an organic relationship between the ancient culture of the Indus Valley and Hinduism of to-day."

—R. C. Majumdar

इन लोगों के धर्म को तीन प्रमुख अङ्गों में बाँट सकते हैं :—

## (१) प्रकृति-पूजा

एक मोहर पर एक ऐसी स्त्री का चित्र बना है जिसके गर्भ से वृक्ष निकलता हुआ दिखाया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि सिन्धु घाटी के लोग पृथ्वी देवी की उपासना करते थे। इसके अतिरिक्त ये लोग जल, पशु और वृक्ष आदि की भी पूजा करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रकृति-पूजा कालान्तर में शक्ति-पूजा के रूप में बदल गई थी।

## (२) मातृ देवी की उपासना

मुहरों पर अंकित नारी मूर्ति से यह स्पष्ट होता है कि ये लोग मातृ देवी की उपासना करते थे। इस प्रकार की मातृ-पूजा अन्य देशों में भी होती थी। यहाँ के लोग मातृ-देवी की पूजा बलि द्वारा करते थे और बलि में नर-बलि भी सम्मिलित थी।

## (३) पशुपति की उपासना

एक देव की मूर्ति प्राप्त हुई है, जिससे प्रमाणित होता है कि ये लोग शिव की पूजा करते थे। विद्वानों का ऐसा मत है कि यह शिव का प्रागैतिहासिक रूप था।

"Scholars interpret this God as the proto-type of the historic God Shiva."

N. N. Ghosh

## निष्कर्ष

सिन्धु घाटी की सभ्यता का जो विवेचन किया गया है उससे यह सिद्ध हो जाता है कि अत्यन्त प्राचीन सभ्यता होते हुये भी यह विकसित और उच्चकोटि की सभ्यता थी। यह एक विस्मय की बात है कि सभ्यता के उषा काल में भी भारतवर्ष ... उन्नति कर ली थी।